रस एवम् ध्वनि सिद्धान्तों की फिल्मी संगीत में उपयोगिता

पारूल शर्मा
पी॰एच॰डी॰ (शोद्यार्थी), संगीत एंव नृत्य विभाग,
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र,

ध्वनि सिद्धांत, भारतीय काव्यशास्त्र का एक संप्रदाय है। भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतो में यह सबसे प्रबल एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत है। ध्वनि सिद्धांत का आधार अर्थ ध्वनि को माना गया है, इस सिद्धांत की स्थापना का श्रेय आनंदवर्धन को है आनंदवर्धन के पश्चात अभिनव गुप्त ने ध्वन्यालोक और लोचन टीका लिखकर ध्वनि सिद्धांत का प्रबल समर्थन किया । आनंदवर्धन और अभिनव गुप्त दोनो ने रस और ध्वनि का अटूट संबंध दिखाकर रस मत का ही समर्थन किया था । आनंदवर्धन ने रस ध्वनि को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि माना है, जबकि अभिनवगुप्त रस–ध्वनि का ध्वनित मानते है ।

रस का शाब्दिक अर्थ है "आनंदञ काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहा जाता है ।

भरत मुनि द्वारा रस की परिभाषा :

रस उत्पति को सबसे पहले परिभाषित करने का श्रेय भरतमुनि को जाता है । उन्होने अपने नाट्यशास्त्र में आठ प्रकार के रसों का वर्णन किया है। रस की व्याख्या करते हुए भरतमुनि कहते है कि सब नाट्य उपकरणों द्वारा प्रस्तुत एक भाव मुल्क कलात्मक अनुभूति है। रस का कैद्र रंगमंच है। भरत ने स्थाई भाव को ही रस माना है। नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने रस को व्यक्त करते हुए कहा हैः–

वीभवानुभव्यभिचरीस्योगद्रस निष्पत्तिः अर्थात विभाव, अनुभाव व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।

भरत में प्रथम 8 रसों में श्रृंगार, रोद्व वीर तथा वीभत्स को प्रधान मानकर क्रमशः हास्य, करूण अद्भुत तथा भयानक रस की उत्पत्ति मानी गई है।

नाद और ध्वनिः

संगीत का संबंध ध्वनि से या आवाज से है, हम जो भी सुनते है वह सब ध्वनि ही है, हम कुछ ध्वनियों को सुनना पंसद करते है और कुछ को नहीं, जिन ध्वनियों को हम सुनना पसंद करते हैं उन ध्वनियों को मधुर, और जिनको हम सुनना पसंद नही करते उन्हे हम कर्णकटु या फिर कर्कश कहते हैं संगीत का संबंध केवल मधुर और कर्णप्रिय आवाज या ध्वनि से है यही मधुर ध्वनि नाद कहलाती हैं । संगीत का ध्वनि से अटूट संबंध है ध्वनि की उत्पति कंपन से होती है। संगीत में ध्वनि का प्रयोग करके स्वर उत्पन्न किए जाते है और ध्वनि के माध्यम से ही विभिन्न प्रकार के राग और भाव प्रकट किए जाते है संगीत वादन हो या गायन सभी का माध्यम ध्वनि ही होती है ।

शारंग देव के संगीत रत्नाकर में कहा गया हैः—

आहतो आनहताश्रेति दृविधा नादो नीगधते ।

इनके अनुसार नाद दो प्रकार के होते हैं । आहत नाद, और अनाहत नाद आहत नाद का अर्थ है, आधात किया हुआ आधात द्वारा उत्पन्न नाद आहत नाद कहलाता है । यह नाद संगीत उपयोगी माना जाता है, आहत नाद से ही स्वरों की उत्पत्ति हुई है । नाद की परिभाषा में कहा है कि स्थिर और नियमित आंदोलन से उत्पन्न नाद की आहत नाद है । अनाहत नाद का अर्थ है, जो नाद केवल अनुभव से जाना जाता है, अर्थात जो बिना किसी कारण के स्वयं उत्पन्न होता है, तथा सामान्य रूप से सुनाई नही देता अनाहत नाद होता है । इसे सूक्ष्म अथवा गुप्त नाद भी कहा जाता है । अनाहत नाद संगीत उपयोगी नही होता है ।

चित्रपट संगीतः

भारतीय चित्रपट संगीत का प्रारंभ उस कालखंड से आरंभ हुआ जब चित्रपट के नायक एवं नायिका स्वयं ही अपने गीत और अभिनय करते । कला के प्रति ऐसे निष्ठावान कलाकारों के आधार पर फिल्मी संगीत दुनिया की नींव रखी गई । ऐसी कला के प्रति समर्पित कलाकारों द्वारा ही यह श्रृंखला आगे की और अग्रसर हुई, इस श्रृंखला में लता मंगेशकर भी ऐसी ही कलाकार है जिन्होने अपने प्रारंभिक दिनों में अभिनय और गायन साथ किया । पूर्व काल में ऐसे कलाकारों का चयन होता था, जिन्हे अभिनय नृत्य संगीत तीनो में महारत हो ।

भारतीय संगीत बहुत व्यापक विषय है जिसने कई संगीत शैलियों को

जन्म दिया और इसी आधार पर भारतीय संगीत सभी संगीतओं का आधारभूत स्तंभ है । भारतीय संगीत में विभिन्न प्रकार की विधाओं का निर्माण किया गया, जैसे :–

1. शास्त्रीयसंगीत
2. उपशास्त्रीय संगीत (ठुमरी, चैती, कजरी, दादरा)
3. लोक संगीत
4. सुगम संगीत (गीत, गजल, भजन,)

भारतीय चित्रपट संगीत मात्र एक ऐसा नाम नहीं है । यह दीर्गकालीन यात्रा है, जिसमें अपने कालखंड में अनेको बार उतार चढ़ाव देखे, फिल्मी संगीत, संगीत को रोचक, मनोंरजन एवं जनसामान्य तक पहुंचाने का एक सशक्त साधन है और इसी आधार पर इसकी यात्रा अनंत काल से चलकर आज अपने स्वर्गीय वर्तमान तक पहुंची है ।

रस व ध्वनि की फिल्मी संगीत में उपयोगिता :

वर्तमान समय में फिल्मी संगीत अत्यंत लोकप्रिय है । प्रत्येक उम्र का व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो, युवक हो, वृद्ध हो, स्त्री हो या पुरूष हो सभी संगीत को गाना और सुनना पंसद करते हैं । फिल्मों के गानों में उपयोग होने वाली मधुर ध्वनि से मानव तनाव एवं चिता से मुक्त होता है।

ध्वनि और संगीत का मानव के स्वास्थ्य पर आत्याधिक प्रभाव पडता है। ध्वनि चिकित्सा का उपयोग अस्पतालों, विद्यालयो, कार्यालय और मनोवैज्ञानिक उपचारों में किया जाता है । इससे खिंचाव कम होता है रक्तचाप कम होता है और दर्द दूर होता है । सांगीतिक ध्वनियों के प्रयोग से मानसिक रूप से ग्रस्त मनुष्य को ठीक किया जा सकता है ।

फिल्म एक लोकतांत्रिये कला है, यह किसी लेखक, मूर्तिकार, चित्रकार, फोटोग्राफर, संगीतकार, गीतकार गायक तथा कलाकार की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं है, इन सभी की कलाओं का सामूहिक योगदान है ।

फिल्मों में प्रयुक्त होने वाली गीत और उनके संगीत की निर्माण प्रक्रिया में भी गीतकार, संगीतकार, गायकवाद का विभिन्न वाद्य वादक, रिकॉर्डर का सामूहिक योगदान होता है । फिल्म में उसके वातावरण के अनुकूल प्रयोग को निर्देशक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । निर्देशक पर निर्भर करता है, कि फिल्म में कब कहां कैसे गीत प्रयुक्त करना है । जब भारतीय फिल्मों में संगीत भी प्रस्तुत किया जाने लगा तो फिल्मों की लोकप्रियता और अधिक बढ गई । फिल्मों में संगीत दने का श्रेय संगीत

निर्देशक या फिल्म संगीतकार को जाता है । गीतों मे ताल, रस की एक महत्वपूर्ण भूमिका है फिल्मी संगीत मे भी करूण, श्रृंगार, शांत, वात्सल्य, वीर, रूद्र, अदभुत, हास्य आदि रसों की निष्पति के लिए उपयुक्त तालों तथा उनके विविध स्वरूपों का प्रयोग विभिन्न दृश्यों के लिए आवश्यकतानुसार किया जाता है । जिससे वातावरण में संजीवता आती है।

1. जैसे : गीत– सावन का महीना पवन करे शोर

फिल्म : मिलन

गायकः मुकेश / लता

संगीतकार लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल, गीतकारः आनंद बख्शी, रस भावः शृंगार रस की प्रधानता, वाद्य का प्रयोग, ढोलक, संतूर, तबला, स्ट्रीगी, बांसुरी आदि का मिश्रण है । राग : पहाड़ी पर आधारित है ताल कहरवा है।

स्वर–समूह :

सा ध ध ग, ग ग रे ग, गरे, गरे सारे, पप सा, पध प, मरे, गम ग गरे, रेरेनि, रेरे सा निध ।

2. भजन "ज्योति कलश छलके, हुए गुलानी लाल सुनहरे रंग दल बादल के"

फिल्म : भाभी की चूडिया (1961)

गायक : लता मंगेशकर

संगीतकार : सुधीर फडके

गीतकार : पं॰ नरेन्द्र शर्मा

सांगीतिक विश्लेषण :

रस–भाव इस भजन मे श्रृंगार व भक्ति रस की प्रधानता है । इस भजन में गीत कार ने उगते हुए सुरज की सुन्दरता का वर्णन किया है। स्वर–समूह–सां गं रे सां, गं रे सां, घ प ग, सां घप, सां घप, ग रे सा ।

वाद्यों का प्रयोग :

इस गीत में जल तरंग, तबला, ढोलक, वायलन, मियानों, सितार, मंजीरा व बांसुरी का सुंदर प्रयोग किया गया है ।

राग का प्रयोग : यह गीत भुपाली राग पर आधारित है शैली– उपशास्त्रीय

ताल का प्रयोग : इस गीत में कहरवा ताल का प्रयोग किया गया है । गीत

की शुरूआत आलाद से की गई है स्थाई का उठान दुसरी मात्रा से और अंतरे का उठान सम से किया गया है ।

निष्कर्ष :

आजकल चलचित्रों में ध्वनि का आंकलन भी फिल्म के ही एक किनारे पर होता है । ध्वनि अंकन प्रारंभ में तो फोटोग्रफी द्वारा ही होता था । परंतु आधुनिक काल में अधिक झुकाव चुंबकीय आलेखन की और है फोटोग्राफी द्वारा ध्वनि अंकन के लिए दो विधियां प्रयुक्त होती है । इसमें एक विधि है, परिवर्तित क्षेत्रफल विधि तथा दूसरी विधि है, परिवर्तित घनत्व विधि इन दोनों ही विधियों का आधारभूत सिद्धांत समान है अर्थात् ध्वनि के अनुरूप परिवर्तन छायांकन चलचित्र फिल्म के एक किनारे पर होता है। आजकल अधिक परिवर्तित क्षेत्रफल विधि का प्रयोग होता है ।

संदर्भ ग्रंथ–सूची :

1. डॉ॰ इन्दु भार्मा 'सौरभ, भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय, कनिश्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली –110002
2. डॉ॰ विमल, हिन्दी चित्रपट एंव संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन दिल्ली ।
3. डॉ॰ शालू रानी, स्वर्ण युग के पार्श्व गायक कलाकारः व्यक्तित्व एंव कृतित्व, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली–110002